IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्रसंघ राजनीति का बदलता स्वरूप उसके दोश :सुझाव और समाधान उत्तराखण्ड के विषेश सन्दर्भ में

The changing form of student union politics and its defects: Suggestions and solutions with special reffrence to uttarakhand

*इन्दर प्रसाद ,**प्रो0दिव्या उपाध्याय जोशी

सारा"ा

विश्व इतिहास साक्षी है कि किसी देश में जब भी क्रान्ति हुई, किसी राष्ट्र ने आर्थिक क्षेत्र में उन्नति की, अथवा जहाँ कहीं सामाज में बुनियादी परिवर्तन हुए, उसकी अगुवाई युवा वर्ग ने की। हम कह सकते हैं"देश का युवा वर्ग उसके भविष्य का नियामक होता है। आज के छात्र ही देश के भविष्य हैं, अतः विद्यार्थियों में जैसे मूल्य स्थापित किये जायेंगे वैसे ही समाज होगा। अतः विद्यार्थियों का उचित प्रशिक्षण आवश्यक है। इतिहास गवाह है कि युवा शक्ति के समुचित उपयोग से समाज को मनचाहे ढंग से मोड़ा गया है। अतः किसी राष्ट्र के प्रगतिशीलता एवं नैसर्गिक विकास के मानदण्ड को तय करने में युवा शक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। युवाओं ने जहाँ एक ओर राजनीति में अपनी सक्रिय सहभागिता को दर्ज किया है, वही दूसरी तरफ जड़वत सामाजिक व्यवस्था को नेस्तनाबूत करके उसे एक नवीन दृष्टि देकर पुनः उसे जीवन देने की कोशिश की है।युवाओं में इस प्रकार का जो सामाजिक सरोकार देखने को मिलता है वह उनकी व्यापक सामाजिक दृष्टि का परिणाम है। जिनकी गुणवत्ता में उत्तरोत्तर वृद्धि परिलक्षित हो रही है। इन परिस्थितियों में युवा शक्ति नेतृत्व की चर्चा आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य भाब्द, राजनीति, छात्र राजनीति,युवा भाक्ति,युवा संगठन,छात्र राजनीति का सकारात्मक प्रभाव

प्रस्तावना

भारत को विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक दे"ा माना जाता है जिसमें जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन सुनिश्चित करने की भरपूर कोशिश की जाती है। लोकतंत्र को सफलता पूर्वक चलाने के लिए राजनीतिक प्रशिक्षण की महती आवश्यकता होती है। छात्र राजनीति को राजनीतिक प्रशिक्षण का प्रथम प्रमुख सोपान माना जाता है। छात्र राजनीति का एक प्रमुख मकसद यह भी है कि छात्र अपने अध्ययन के साथ–साथ देश की प्रगति, चुनौतियों, विकास की संभावनाओं तथा बुनियादी मुद्दों एवं जरूरतों से भी रूबरू हो सकें तथा अपनी नेतृत्व क्षमताओं का विकास कर सकें। इस तरह यह कहा जा सकता है कि छात्रों का विश्वविद्यालयीय जीवन उनके लोकतांत्रिक अनुभवों के निर्माण, पुष्टीकरण और फलस्वरूप भावी राजनैतिक समझ को विकसित करने का भी काम करता है।राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में छात्रों और युवकों का असीमित एवं सराहनीय योगदान रहा है। युवा वर्ग छात्र, वर्ग अपनी शक्ति का प्रयोग जिस किसी भी क्षेत्र में करें उन्हें सफलता अवश्य मिलती है। शक्ति शब्द ही कुछ ऐसा है जो सफलता का बोध कराता है। 1

*भाोध छात्र राजनीति विज्ञान, विभाग डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल,
**प्रोफेसर,निदे"ाक एच आर डी सी राजनीति विज्ञान, विभाग डी0 एस0 बी0 परिसर कुमाऊँ वि"वविद्यालय,नैनीताल,

छात्र राजनीति

राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में छात्रों एवं युवकों का असीमित एवं सराहनीय योगदान रहा है युवा वर्ग छात्र वर्ग अपनी शक्ति का प्रयोग जिस किसी क्षेत्र में भी करें उन्हें सफलता अवश्य मिलती है शक्ति शब्द ही कुछ ऐसा है जो सफलता का बोध कराता है छात्र शक्ति समाज को जिस ओर मोड़ना चाहे उस ओर मोड सकती है छात्र शक्ति का यदि सही दिशा में निर्देशन हो तो समाज के हित में अच्छे परिणाम निकलते हैं इतिहास साक्षी है आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक जितने भी संघर्षरत छात्र आंदोलन हुए हैं छात्रों की भूमिका सर्वोच्च रही है छात्र ही संघर्ष के मुख्य अंग रहे हैं। बहुत से विचारकों के विचार हैं कि छात्र शक्ति राष्ट्रशक्ति है यह सही प्रतीत होती है तथा छात्र शक्ति का सही दिशा में उपयोग होने से राष्ट्र का निर्माण संभव है आज के छात्र देश के भविष्य हैं अतः छात्रों का जैसा चरित्र निर्माण किया जाएगा वैसा ही देश का भविष्य होगा उसी प्रकार या तो छात्रों का प्रशिक्षण भी उसी रूप में होना चाहिए छात्रों को जिस रूप में प्रशिक्षित किया जाएगा उसी रूप में किसी क्षेत्र में वह देश का नेतृत्व करेंगे अतः आवश्यक है कि छात्रों के परीक्षण की दिशा में हमें पूर्ण तरह सजग एवं जागरूक रहना चाहिए। ताकि उनको सही परीक्षण प्राप्त हो सके छात्रों का चहुंमुखी विकास हो सके इसके लिए भी हमें आवश्यक साधन उपलब्ध कराने होंगे निश्चित आदर्श निश्चित उद्देश्य निश्चित दिशा के अभाव में छात्र समुदाय भटक रहा है एवं छात्र राजनीतिक पार्टियां निहित स्वार्थी तत्वों एवं कभी–कभी असामाजिक सभी छात्रों का अपना अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु गलत उपयोग करते हैं। आज छात्रों को अपना भविष्य असुरक्षित दिखता है। जब तक उन्हें अपना निश्चित भविष्य का पता नहीं रहेगा तब तक उनका सही विकास असंभव है असुरक्षित भविष्य के कारण ही आज छात्रों के बीच तनाव का वातरवरण व्याप्त है बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप में छात्रों के सामने है आज के छात्र डिग्रि के बावजूद भी साधारण नौकरी प्राप्त नहीं कर पाते सभी क्षेत्र में व्याप्त भाई भतीजे वाद तथा भ्रष्टाचार के कारण छात्रों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जातिवाद बेरोजगारी भ्रष्टाचार व्याप्त है जिसके कारण छात्रों के बीच तनाव का वातावरण हैं। प्राचीन भारत में शिक्षा का उददे"य था आद"ा मानव का चरित्र निर्माण । 2

राजनीति

राजनीति को परिभाषित करने की समस्या आज से 2500 वर्ष पूर्व अरस्तू ने जब राजनीति को सर्वोच्च विज्ञान (Master of Science) कहकर पुकारा था, उस समय से लेकर आज तक इस विषय के विभिन्न विद्वान राजनीति को परिभाषित करने का प्रयत्न करते रहे हैं।. प्राचीन काल में प्लेटो और अरस्तू, आदि विद्वानों ने इसके अर्थ व स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तो मध्यकाल में चर्च के धर्म आचार्यों विशेषतया सन्त ऑगस्टाइन, टॉमस एक्वीनास और मार्सेलिओ ऑफ पेडुआ ने इस विषय पर चिन्तन किया। आधुनिक युग में मैकियावली से लेकर संविदावादी विचारक हॉब्स लॉक और रूसो उपयोगितावादी बेंथम और मिल, आदर्शवादी काण्ट, हीगल और ग्रीन तथा वर्ग संघर्ष के प्रणेता एवं वैज्ञानिक समाजवाद के जनक कार्ल मार्क्स द्वारा राजनीति के स्वरूप पर अनवरत रूप से चिन्तन, मनन और विश्लेषण किया जाता रहा है,। लेकिन इस प्रकार के अनवरत और भागीरथ प्रयत्न के बावजूद भी यह निश्चित नहीं हो पाया है। कि राजनीति का वास्तविक स्वरूप क्या है ? राजनीति के प्रसंग में इस अनिश्चित स्थिति के लिए अनेक तत्व उत्तरदायी हैं। सर्वप्रथम इस स्थिति के लिए सबसे प्रमुख तत्व राजनीति के क्षेत्र की अत्यधिक व्यापकता है। सौल्टाऊ लिखते हैं, राजनीति ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से सम्बन्धित है जो उत्तरदायित्व की भावना रखता है" 3

छात्र आंदोलन

इंग्लैण्ड के लॉर्ड सेल्सबरी ने इण्डियन सिविल सर्विस अधिनियम (1876–79 ई०) में संशोधन करके आई० सी० एस० की परीक्षा में बैठने की अधिकतम आयु सीमा को 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया। निश्चित रूप से संशोधन की कार्यवाही जानबूझकर भारतीय परीक्षार्थियों के चुने जाने की सम्भावनाओं को कम करने के उद्देश्य से की गई थी। भारत के ऐसे छात्र, जो बौद्धिक स्तर पर उदीयमान हो रहे थे, उनके लिए आई० सी० एस० तथा अन्य स्तर की सेवाओं में जाने का विकल्प ही खुला था, उसमें इस संशोधन के द्वारा अवरोध उत्पन्न हो गया था। छात्रों के बीच इस माँग पर भी विचार उठ रहा था कि आई० सी० एस० की परीक्षा व्यवस्था एक ही समय में इंग्लैण्ड के साथ–साथ भारत में भी कराई जाय, क्योंकि आर्थिक कारणों से कतिपय मेघावी भारतीय छात्र इंग्लैण्ड जाकर परीक्षा में शामिल होने की स्थिति में नहीं थे। कलकत्ता स्टूडेण्टट्स एसोसिएशन तथा अन्य छात्र संगठनों ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी तथा आनन्दमोहन के नेतृत्व में आई० सी० एस० की परीक्षा में बैठने

की अधिकतम आयु सीमा 21 वर्ष किये जाने, आई० सी० एस० की परीक्षा इंग्लैण्ड और भारत में एक साथ आयोजित कराने तथा शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेज और भारतीय प्रतियोगियों के बीच समान अवसर लागू किये जाने की माँग को लेकर आन्दोलन प्रारम्भ किया। सुरेन्द्रनाथ और आनन्दमोहन ने इन माँगों को लेकर लोकमत जाग्रत करने के उद्देश्य से बंगाल, पंजाब, संयुक्त प्रान्त, मद्रास आदि प्रान्तों के दौरे किये। जगह–जगह छात्रों की सभाएँ हुईं। छात्रों का यह आन्दोलन देश के विभिन्न भागों में फैलता गया और राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों के इस देशव्यापी प्रतिरोध की चर्चा हुई। उस समय स्वतन्त्रता या स्वराज्य के विचार आम तौर पर प्रकट ही हो रहे थे, इसलिए ब्रिटिश सरकार के अधीन नौकरी करने के लिए समान अवसर की माँग पर चले आन्दोलन की आलोचना भी नहीं की जा सकती। जो परिस्थितियाँ उस समय व्याप्त थीं उसके दायरे में रखकर छात्रों के इस आन्दोलन को देखा जाय तो यह आन्दोलन छात्रों में उभरे आत्म सम्मान और स्वाभिमान का प्रथम प्रदर्शन था, जिसके लिए उन्होंने सामूहिक रूप से संघर्ष किया। यह शासक जाति के छात्रों के अनुरूप शासित वर्ग के छात्रों को समान स्तर पर स्वीकार कराये जाने की दिशा में बढ़ाया गया पहला कदम था। ब्रिटिश छात्रों की बौद्धिकता और प्रशासनिक क्षमता को भारतीय प्रतियोगी छात्रों द्वारा दी गयी पहली चुनौती थी। समानता और समान अवसर के सिद्धान्त का प्रथम उद्घोष था। अंग्रेजों से समानता के लिए उठाई गई माँग और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से छात्रों का यह सार्वजनिक प्रस्तुतीकरण भारत के इतिहास में अपना अलग महत्व रखता है। भारत के छात्रों का यह प्रथम आन्दोलन ही भारत का पहला राष्ट्रीय आन्दोलन था। 4

उत्तराखण्ड में छात्र राजनीति :

उत्तराखण्ड में छात्र राजनीति की काफी समृद्ध एवं गौरवशाली परम्परा रही है। आजादी से पूर्व देश की आजादी के आन्दोलन में देश के अन्य हिस्सों की तरह इस क्षेत्र के छात्र–नौजवानों ने अपनी निर्णायक एवं नेतृत्वशाली भूमिका का निर्वहन किया है। आज़ादी के आन्दोलन के दौर में इस पर्वतीय क्षेत्र में उच्च शिक्षा के अवसर लगभग नही के बराबर थे और जो छात्र थे वे इण्टर कालेजों एवं छोटे कालेजों के छात्र थे। राष्ट्रीय नेताओं के आह्वान पर उनके द्वारा आजादी के आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भागीदारी की गई। यही नहीं इस क्षेत्र से उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु लखनऊ, बनारस एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालयों की ओर गये छात्र समुदाय ने भी यहाँ पर देश की आजादी के आन्दोलन में अपना योगदान दिया गया। उस दौर के इस पर्वतीय अंचल से शिक्षा ग्रहण करने हेतु गये छात्र समुदाय में के कई ने अपनी नेतृत्व क्षमता से सबको प्रभावित किया और वे छात्र संघों के निर्वाचित प्रतिनिधि भी रहे गोविन्द बल्लभ पंत, हेमवती नन्दन बहुगुणा एवं नारायण दत्त तिवारी के नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय हैं। 1936 में देश के छात्र समुदाय ने पहले छात्र संगठन ऑल इण्डियन स्कडेण्टस फैडरेशन (ए.आई.एस.एफ.) का गठन किया। जिसका प्रभाव इस क्षेत्र के छात्र समुदाय पर भी पड़ा और यहाँ के भी कई छात्र इस संगठन के साथ जुड़े हेमवती नन्दन बहुगुणा का नाम इसमें उल्लेखनीय है।

उत्तराखण्ड के इस पर्वतीय भू–भाग के देहरादून क्षेत्र ने आजादी के आन्दोलन में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है और देश की आजादी के लिये चले प्रत्येक आन्दोलन में यहाँ के छात्र समुदाय ने काफी सक्रिय भूमिका निभाई। 1942 के महत्वपूर्ण आन्दोलन में यहाँ के छात्र समुदाय ने अन्य स्वतंत्रता संग्रामियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर संघर्ष किया और भारत छोड़ो आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाई।

देहरादून के अलावा इस पर्वतीय क्षेत्र के कोटद्वार, श्रीनगर, अल्मोड़ा एवं नैनीताल आदि स्थानों पर भी छात्र समुदाय द्वारा आजादी के आंदोलन में अपना योगदान दिया गया। कुमाऊँ मण्डल के अल्मोड़ा एवं नैनीताल जनपद उस दौर में छात्र राजनीति के केन्द्र बिन्दु थे। नैनीताल के पदमपुरी के नारायण दत्त तिवारी का नाम इसमें उल्लेखनीय है, जिन्होंने बहुत कम आयु में ही देश की आजादी के आन्दोलन में पदार्पण किया। 5

छात्र राजनीति का बदलता स्वरूप

छात्र आन्दोलन को उग्र रूप देना सर्वे के अनुसार 55 प्रति"ात विद्यार्थी छात्र आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग नहीं करना चाहते क्योंकि सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करने के लिए गलत है। अगर कभी आंदोलन उग्र हो जाता है तो विद्यार्थीयों के ऊपर लाठीचार्ज मुकदमे जैसे सक्त निर्णय सरकार को लेने पड़ते हैं। कभी कभी मुकदमें तक छात्रों पर हो लाते हैं जिससे विद्यार्थियों का भविष्य भी खराब हो जाता है।

छात्र राजनीति का बदलता स्वरूप :परिसर महाविद्यालय संस्थानों में असहिष्णुता, पक्षपात और नफरत के लिए कोई स्थान नहीं है।" – प्रणब मुखर्जी वर्तमान की छात्र राजनीति का बिगड़ते स्वरूप का मुख्य कारण है कि सभी छात्र संगठन किसी न

किसी राजनीतिक दलों की विचारधाराओं के साथ कार्य कर रहे हैं। छात्र संगठन भी राजनीति दलों की तरह चुनाव जीतने के लिए कई प्रकार के अनैतिक मार्ग अपनाने लगे हैं जिससे कॉलेज परिसर में अराजकता का माहौल उत्पन्न हो रहा है।

लिंगदोह कमेटी की सिफारिशों को अनिवार्य रूप से लागू करना :छात्र राजनीति में विसंगतियों को दूर करने के लिए उच्च न्यायालय की निगरानी में एक कमेटी बनाई गई थी, जिसकी अध्यक्षता– जे॰ एम॰ लिंगदोह ने की थी। उनके द्वारा दिये गये सुझावों का छात्र संघ चुनावों में खुल्लेआम उल्लघंन किया जाता है। लिंगदोह समिति की सिफारिशों को किस प्रकार से ठोस रूप दिया जाए यह प्रशासन के लिए वर्तमान में एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। वर्तमान छात्र राजनीति की कई चुनौतियाँ है जिससे कई प्रकार की समस्याएँ खड़ी हो गयी हैं छात्र राजनीति किस प्रकार से अपने शुद्धतम् रूप में निखरे यह भी एक चुनौती हो गई। लिंगदोह समिति ने अपनी सिफारिशों में कहा कि इन सिफारिशों की समीक्षा इसे लागू करने के बाद अवश्य होनी चाहिए एवं इसमें प्रथम समीक्षा दो वर्ष पश्चात् व द्वितीय समीक्षा तीसरे या चौथे वर्ष में होनी चाहिए। समिति की इन सिफारिशों का आशय यह था कि छात्र संघ निर्वाचनों के दौरान यदि किसी भी प्रकार की व्यावहारिक दिक्कतें आती हैं तो उनका समाधान किया जा सके। समीक्षा के दौरान समाज के विभिन्न वर्गो, प्राध्यापक, प्रशासन, छात्र समुदाय, छात्र संगठनों, बुद्धिजीवियों, अभिभावकों से उनकी राय व सुझाव लिये जायेंगे और तद्नुसार छात्र प्रतिनिधित्व की मशीनरी को दुरस्त किया जायेगा ।

महाविद्यालय और परिसर प्रशासन के बीच समन्वय बनाये रखना–छात्र और कॉलेज प्रशासन के मध्य समन्वय बनाये रखना वर्तमान की सबसे बड़ी चुनौती है जो दोनों के मध्य कटुता को कम कर सके। छात्र और कॉलेज प्रशासन के मध्य आये दिन किसी न किसी समस्या से टकराव होता रहता है यह टकराव छात्रों के भविष्य को प्रभावित करता है साथ ही पढ़ाई में भी व्यवधान होता है। 6

छात्र संगठन और उसके दल

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ABVP : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का(ABVP) उदघोष वाक्य ज्ञान, शील, और एकता अखिल भारतीय छात्र संगठन 9 जुलाई, 1949 को संघ कार्यकर्ता बलराज मधोक जी की अगुआई में की गयी थी। मुंबई के प्रोफेसर यशवंत केलकर जी इसके मुख्य कार्यवाहक बने। विद्यार्थी परिषद का नारा है –ज्ञान, शील और एकता। आज विद्यार्थी परिषद् न केवल भारत का बल्कि विश्व का सबसे बड़ा छात्र–संगठन है।

घोष वाक्य ज्ञान, शील और एकता

उद्देश्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण है। विद्यार्थी परिषद के अनुसार, छात्रशक्ति ही राष्ट्रशक्ति होती है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए छात्रों में राष्ट्रवादी चिंतन को जगाना ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का मूल उद्देश्य है। देश की युवा छात्र शक्ति का यह प्रतिनिधि संगठन है। इसकी मूल अवधारणा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण है। अ भा वि प का नारा है रू छात्र शक्ति– राष्ट्रशक्ति। वैसे एवीवीपी का आधिकारिक स्लोगन –ज्ञान, शील, एकता परिषद् की विशेषता है। 7

नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया NSUI

नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया, एनएसयूआई **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** की छात्र शाखा है, जिसकी स्थापना 9 अप्रैल 1971 को हुई थी। राष्ट्रीय छात्र संगठन बनाने के लिए केरल छात्र संघ और पश्चिम बंगाल राज्य छत्र परिषद को मिलाकर इन्दिरा गांधी ने इस संगठन की स्थापना की थी। एनएसयूआई के अनुसार सदस्य बनने के लिए, 27 वर्ष से कम आयु का होना चाहिए व छात्र होना चाहिए, भारत का नागरिक होना चाहिए, किसी अन्य राजनीतिक संगठन का हिस्सा नहीं होना चाहिए और अतीत में किसी भी आपराधिक गतिविधि का दोषी नहीं होना चाहिए। एनएसयूआई अपने सदस्यों को प्राथमिक सदस्य और सक्रिय सदस्य में वर्गीकृत करता है। एक इच्छुक सदस्य जो एनएसयूआई सदस्यता के लिए आवेदन करता है, संगठन की जांच प्रक्रिया के बाद प्राथमिक सदस्य बन जाता है। 8

ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन AISF

स्टडी एंड स्ट्रगल के आदर्श वाक्य के साथ 12 अगस्त 1936 को नेहरू के मार्गदर्शन में **ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन** की स्थापना हुई। यह भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने में सहायता करने वाला पहला छात्र निकाय होने का सम्मान है। स्वतंत्रता–पूर्व युग के दौरान के छात्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। हालांकि, छात्रों ने साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के खिलाफ दुनिया भर के संघर्ष से अलग होने के लिए स्वतंत्रता के लिए अपने संघर्ष को नहीं देखा। उन्होंने फासीवाद के खिलाफ संघर्ष में भी हाथ मिलाया और युवाओं के लिए बेहतर जीवन की ओर प्रयास किया। शांति प्रगति और वैज्ञानिक समाजवाद में विश्वास करता है। यह छात्र संगठन पूंजीवाद के खिलाफ है। 9

स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया SFI

एक स्वतंत्र छात्रों का संगठन, 1970 में गठित किया गया था। एक समाजवादी संगठन का नारा है स्वतंत्रता, लोकतंत्र और समाजवाद का मानना है कि शिक्षा भारत को प्रतिगामी विचारों के झोंके से छुटकारा दिलाने का एकमात्र साधन है। एस0एफ0आई एक प्रगतिशील, लोकतांत्रिक और समतावादी शिक्षा प्रणाली की स्थापना की दिशा में प्रयास करता है जो सामाजिक न्याय और बौद्धिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करेगा। एस0एफ0आई का उद्देश्य सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करना सार्वभौमिक और मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली है। एस0एफ0आई का उद्देश्य समाज के एक समाजवादी पैटर्न के प्रति भारत की उन्नति, सामाजिक और आर्थिक समानता सुनिश्चित करना और सभी के लिए सम्मान और समृद्धि का जीवन है। 10

क सं	छात्र राजनीति के दोष	छात्र राजनीति दोष के समाधान
1	छात्र आन्दोलन को उग्र रूप देना	आन्दोलन को सकारात्मक रूप देना
2	धन–बल का प्रयोग	सक्षम नेतृत्व को बढावा देना
3	राजनीतिक दलों की ओर आकर्षित होना	महाविद्यालय परिसर तक छात्र राजनीति को सीमित रहना
4	संचार साधनों का दुरुपयोग	तथ्यों को स्टीक तरीके संचार के माध्यम से छात्रों के बीच रखना
5	लिंगदोह समिति की सिफारिशों को शक्ति से लागू करना	छात्र राजनीति को सरल व सुलभ बनाना
6	व्यक्तिगत हितों के लिए कॉलेज प्रशासन पर दबाव बनाना	दबाव बनाने से पहले छात्रों से सुझाव लेना

ऊपरोक्त तलिका 1.1 के द्वारा छात्र राजनीति के दोश एवं दोश के समाधान को इस प्रकार से दिखया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 चौधरी विनोद कुमार. कारण निवारणः जानकी प्रका"ान पटना, 1989

2 दैनिक हिन्दोस्तान. 13.01.1984

3 J- H- Price. Comparative Government: Bombay, 1974 p- 9

4 पाण्डे भयामकृश्ण. डां सिंह रचना. भारतीय छात्र आन्दोलन का इतिहासः स्वाधीनता का दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2008,

5 कुमार जो"ाी अमित. उत्तराखण्ड मे छात्र संघों का लिंगदोह समिति की सिफारिषों के सन्दर्भ में अध्ययनः षोध प्रबन्ध 2013,

6 डॉ0 तिवारी भुवन .चन्द्र तारा वर्तमान परिदृश्य में छात्र राजनीति की चुनौतियाँ एवं उसके समाधानः न. आ देव जर्नल 2018,

7 www.abvp.in

8 www.nsui.in

9 www.aisf.in

10 www.sfi.in